कहानी

दिव्य दाह

मुद्राराक्षस

रेखांकन : मुकेश बिजौले

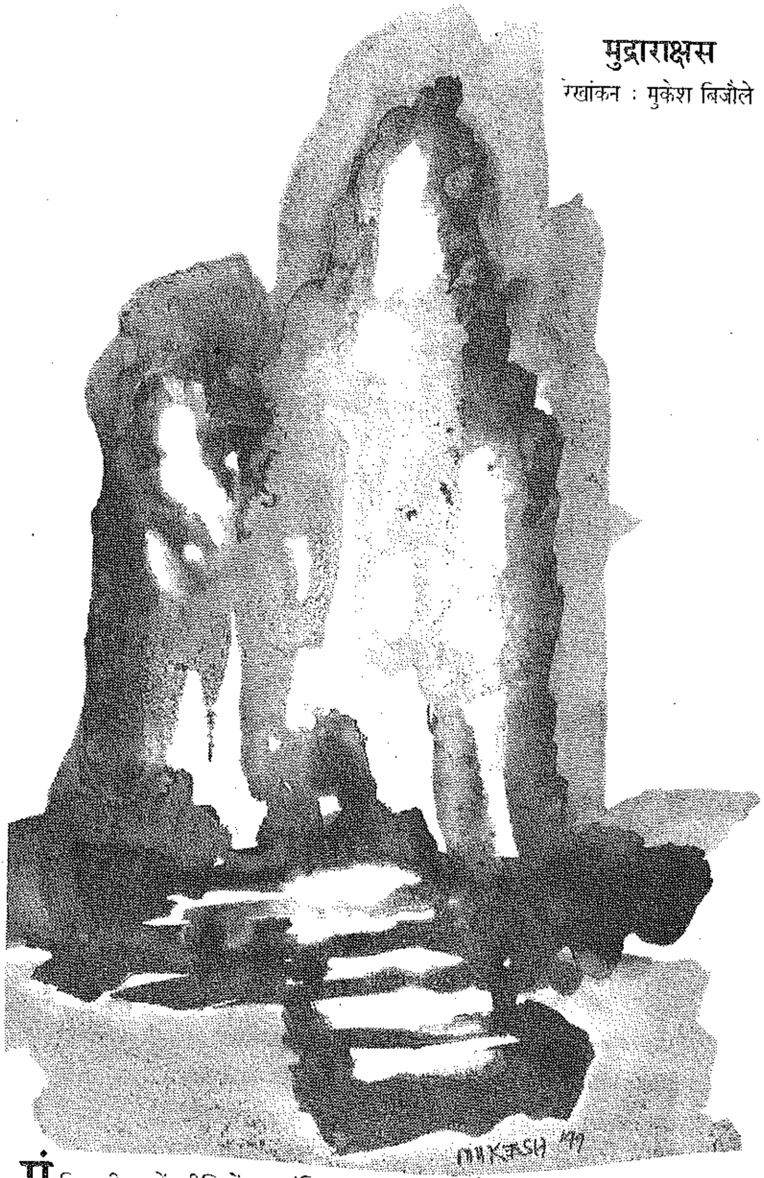

मंदिर की छहों सीढ़ियों पर पंडित रामाज्ञा मिश्र ने पीतल के चमकते हुए कमंडल में आम के पांच पत्ते डुबा-डुबाकर गंगाजल की छींटें डालीं फिर बहुत झुककर आचार्य बृहस्पति को ऊपर चढ़ने का संकेत दिया. आचार्य ने इधर-उधर देखा. उनके सिर पर बाल बहुत कम थे. सिर के बहुत पीछे की ओर थोड़े से लंबे बाल खींचकर उन्होंने शिखा बांध रखी थी. कमर में एक बहुत बारीक और उजली धोती थी जिसका एक सिरा उन्होंने कंधे पर डाल रखा था, पर इससे उनका जनेऊ छुपा नहीं था. उनके कंधे और सीने पर चंदन लगा हुआ था. माथे पर लाल चंदन का एक चौड़ा तिलक था. उनके पैरों में लकड़ी के खड़ाऊं थे जिनसे चलते वक्त खासी आवाज़ होती थी.

मंदिर के गर्भगृह से पहले एक चौकोर सभागार था, जिसके चारों ओर खंभों से टिकी एक बालकनी थी जिसमें महिलाएं बैठती थीं. बालकनी के नीचे की दीवार पर गीता के श्लोक और रामचरित मानस की चौपाइयां लिखी हुई थीं. बालकनी के नीचे दाहिने किनारे पर कुछ भजनीक बैठे थे. ये भजनीक वहां बारी-बारी से सारे दिन और सारी रात कीर्तन करते थे.

इस सभागार में बीचों बीच फर्श पर एक बहुत उजली चादर बिछी थी. चादर पर पांच कुशासन भी डाले गए थे. कुश के वे आसन शायद अभी खरीदे गए थे.

अंदर आचार्य बृहस्पति का स्वागत करने के लिए कई लोग खड़े थे—उम्दा रेशम का कुर्ता और धोती पहने दीनानाथ रस्तोगी, सफारी सूट में प्रोफेसर डा. विष्णु प्रताप सिंह, बहुत सफेद धोती कुर्ते में प्रो. इंद्रध्वज भदौरिया, कमर से नीचे सिर्फ धोती पहने और कंधों पर रामनामी ओढ़े हरिप्रकाश याज्ञिक और दूसरे कई लोग. सभी ने आचार्य के पैर छुए और दीनानाथ रस्तोगी ने फुर्ती से गुलाब के फूलों की एक मंहगी माला उठा ली.

आचार्य का चेहरा पहले से ही खासा तना हुआ था. उस पर इस तरह का निर्वेद था जैसे वह गुलाबी पत्थर का बना हुआ कोई मुखौटा हो. लगता था जैसे वे पलक भी नहीं झपकाते थे. रस्तोगी के हाथ में माला देखकर वे ठिठके. चेहरे पर थोड़ा और तनाव आ गया. उन्होंने याज्ञिक की तरफ किसी पुतले की तरह चेहरा घुमाया. याज्ञिक आगे आ गए—रस्तोगी जी यह क्या कर रहे हैं. पूछ तो लिया होता. आचार्य जी इस सबका स्पर्श नहीं करते. इसे केवल चरणों के पास रख दीजिए.

ठीक इसी वक्त सेलुलर फोन की आवाज़ आई. अब लोगों ने ध्यान दिया, आचार्य बृहस्पति के हाथ में एक बहुत नफीस सुनहली डिब्बी जैसा सेल फोन था. आचार्य फोन पर बोलेः बृहस्पति!

उन्होंने थोड़ी देर चुपचाप फोन पर सुना

मुद्राराक्षस

जन्म : 21 जून, 1933, को गांव बेहटा (लखनऊ)

कृतियां : उपन्यास, नाटक, कहानी, कविता, व्यंग्य और आलोचना तथा अन्य विषयों की लगभग 35 पुस्तकें प्रकाशित. सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि विषयों पर विस्तृत व नियमित लेखन.

सम्पर्क : 78, दुर्विजयगंज, लखनऊ (उ.प्र.)

फिर बेहद मशीनी आवाज़ में संस्कृत में बोले—देखो राय, उस मंत्री से कहो परसों सुबह बात करे.

याज्ञिक खिसियाहट भरी चापलूसी करते हुए संस्कृत में ही बोले—आचार्य जी को लोग निरंतर परेशान करते रहते हैं.

आचार्य ने कोई उत्तर नहीं दिया. वे खुश भी नहीं हुए. खड़ाऊं उतार कर वे सफेद चादर पर आ गए. किसी ने लपककर माला वहां से हटा दी. आचार्य बैठ गए. अब तक बाहर काफी लोग इकट्ठा हो गए थे. मंदिर की सीढ़ियों पर उनमें से कोई नहीं चढ़ा. आचार्य के इशारे पर अंदर के बाकी चार लोग भी बीच की जगह खाली छोड़ कर बैठ गए.

याज्ञिक ने संस्कृत में पूछा—हमारे लिए आज्ञा करें. आप दिव्य के इस आयोजन के न्यायाधीश हैं.

आचार्य ने पूछा—धर्म और अधर्म की मूर्तियां तैयार हैं?

जी आचार्य—याज्ञिक ने मंदिर की मूर्तियों के करीब गोबर के दो पिंडों पर धर्म की चांदी की और अधर्म की रांगे की रखी हुई छोटी-छोटी मूर्तियों की तरफ इशारा किया. गोबर के पिंड नए खरीदे गए मिट्टी के कटोरों में रखे थे.

आचार्य बोले—पंचगव्य छिड़क कर धर्म की मूर्ति पर सफेद और अधर्म की मूर्ति पर काले फूल चढ़ाएं.

फिर जैसे उन्हें कुछ याद आ गया. उन्होंने कहा—आप कह रहे थे कुछ प्राश्निक भी हैं?

याज्ञिक ने कहा : जी वे पधार गए हैं.

लेख्यं यत्र न विद्येद न भुक्तिर्न च साक्षिणः. न च दिव्यावतारोस्ति प्रमाणं तत्र पार्थिवः.. निश्चेतुं येन शक्याः स्युर्वादाः संदिग्ध रूपिणो तेषां नृप प्रमाणं स्यात्स सर्वस्य प्रभुर्यतः—आचार्य ने ऊंचे स्वर में कहा. उनका उच्चारण बहुत साफ सुथरा था.

इसी बीच एक सेवक कागज़ का एक टुकड़ा लेकर आया. वह पर्ची उसने याज्ञिक को दे दी. याज्ञिक ने पढ़ा और एक क्षण बालकनी की तरफ देखा फिर थोड़ा-सा झुककर आचार्य से संस्कृत में ही बोलेः ऊपर कुछ सम्मानीय प्राश्निक बैठे हैं. वे हिंदी के महत्वपूर्ण लेखक हैं. उनमें से एक अत्यंत विख्यात कथाकार हैं. राजनीति और संस्कृति पर बहुत लिखा है. एक वयोवृद्ध हिंदी आलोचक और सामाजिक विचारक हैं. आजकल ऋग्वेद और नाट्यवेद पर काम कर रहे हैं. तीसरे संस्कृत के बड़े आचार्य हैं. वे चाहते थे कि—

आचार्य का चेहरा थोड़ा और सख्त हुआ. उन्होंने कठोर स्वर में पूछा : तीनों के वर्ण?

इस सवाल पर याज्ञिक के चेहरे पर थोड़ी घबराहट आ गई. उन्होंने हिचकिचाते हुए उन तीनों की जातियों का विवरण दिया तो आचार्य का गुलाबी चेहरा सुर्ख हो गया. संस्कृत में दहाड़कर बोलेः शूद्र यहां? कायस्थ शूद्र होता है, आप जानते नहीं?

बालकनी में बैठे तीनों में से संस्कृताचार्य तुरंत सब कुछ समझ गए. उठकर वहीं से खुद भी संस्कृत में बोलेः आचार्य कृपया मेरा अनुरोध भी सुन लें. भारतीय न्यायालयों में यह बहस ज़रूर हुई थी, पर अंततः कायस्थ को शूद्र नहीं माना गया. स्मृतिचंद्रिका के व्यवहार में उद्धृत धर्माचार्य बृहस्पति के अनुसार कायस्थ द्विज होते हैं—यह कह कर उन्होंने अपना परिचय भी दिया.

आचार्य बृहस्पति इतनी बहस के आदी नहीं थे. उन्होंने ऊंची आवाज़ में कहाः तब आप यह भी जानते होंगे कि याज्ञवल्क्य ने राजा को उद्बोधित किया है वह चोरों, दुश्चरित्रों, अत्याचारियों और कायस्थों से दूर रहे. उशना और सुमन्तु की बातों का आपके पास क्या उत्तर है?

याज्ञिक समझ गए बात बिगड़ेगी ही, बनेगी नहीं. वे बहुत आजिजी से बोलेः भगवन इसे मेरा अपना आपद्धर्म मानकर इस समय शांत हो जाएं! जिन पर आपत्ति है वे इस घटना पर कुछ लिखेंगे तो धर्म का कल्याण होगा. साहित्य जगत में उनकी बड़ी ख्याति है.

पूरी तरह तो नहीं संस्कृत में होने वाली उस बहस का कुछ हिस्सा वयोवृद्ध ऋग्वेदाध्यायी महोदय को भी समझ में आया. उन्हें इतना तो लग ही गया कि उनके साथ आए एक वरिष्ठ कथाकार और चिंतक की जाति को लेकर बहस हुई है. सामने की रेलिंग पकड़कर उन्होंने अपना भारी भरकम, लेकिन काफी बूढ़ा हो चुका शरीर खड़ा किया. वे कभी खासे ही कसरती रहे होंगे. अभी वे कुछ कहना ही चाहते थे कि उनके संस्कृताचार्य साथी ने उनका हाथ दबाया.

नीचे कुछ वाक्य और बोले गए और लगा आचार्य बृहस्पति अब अपनी असहमति पहले से ज़्यादा तीखेपन से प्रकट करेंगे. पर उन्होंने एक बार बालकनी की ओर हल्के से देखा और दो क्षण के लिए आंखें बंद करके बैठ गए. वहां एकदम सन्नाटा हो गया.

आचार्य थोड़ा-सा सहज होकर बोलेः याज्ञवल्क्य में उद्धृत बृहस्पति का वचन है कि जिस शूद्र की परीक्षा होनी है उसे लाल वस्त्र पहनाया जाए.

याज्ञिक ने संस्कृत में ही कहाः पहना दिया है आचार्य.

आचार्य बोलेः और भी कहा है, उसके मुंह पर श्मशान की राख पोती जाए, छाती पर बकरे के खून में डुबोई पांचों उंगलियों की छाप लगी होनी चाहिए और गले में पशु

की अंतड़ियों की माला लटकाई जानी चाहिए—यह घोषणा करिए.

याज्ञिक ने घोषणा कीः शूद्राणांतु यथाह बृहस्पतिः. तं क्लैव्येनालं कारग्रालंकृत्य शवभस्मना मुखं विलिप्याग्नेयस्य पशो शोणितेनोरसि पंचांगुलानि कृत्वा ग्रीवायाम् आंत्राणि प्रतिमुच्य सव्येन पाणिना सीमालोष्टं मूर्धिन धारयेति. इति याज्ञवल्क्येन स्मृतम् विश्वरूपे.

सभी ने कहाः इति याज्ञवल्क्येन स्मृतम् विश्वरूपे.

मंदिर के बाहर सीढ़ियों के नीचे अब काफी भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी. शाम होने वाली थी और आसमान आश्चर्यजनक रूप से पीला हो रहा था और सामने के बहुत पुराने पीपल के पेड़ पर ढेरों परिंदे चीख रहे थे. भीड़ बिल्कुल खामोश थी, पर भीड़ से काफी दूर कोई औरत जैसे कराह रही थी और कुछ बच्चे रो रहे थे.

शायद उनकी ये आवाजें आचार्य ने भी सुनी हों. उन्होंने एक बार सख्त निगाहों से बाहर की तरफ देखा. याज्ञिक थोड़ा अस्थिर हुए फिर उठकर भीड़ की तरफ आए. ऊपर से ही दबी आवाज़ में उन्होंने रुदन बंद कराने के लिए कहा. सामने से दो-तीन युवक बड़ी तेजी से भीड़ चीरकर पीछे गए.

पादरी मार्टिन राम लगभग इसी वक्त लौटते थे. उनके पास आज भी एक बहुत पुरानी फाक्स वैगन बीटल गाड़ी थी जिसमें इंजन पीछे लगता है. यह रास्ता थोड़ा छोटा पड़ता था गोकि इधर भीड़ काफी होती थी. पर आज मंदिर के सामने सड़क पर और दिनों से ज्यादा ही भीड़ थी. उनकी गाड़ी बहुत मुश्किल से ही आगे निकल पाई. भीड़ से आगे निकल जाने पर मार्टिन राम को सहसा थोड़ी हैरानी हुई. मंदिर में कीर्तन वगैरह कुछ नहीं हो रहा था फिर भी वहां इतनी भीड़ थी और भीड़ भी लगभग एकदम खामोश थी. तभी उनकी नजर पड़ी कुछ लोग एक पागल जैसी दिखती औरत और दो-तीन बच्चों को लगभग धकेलते हुए भीड़ से दूर ले जा रहे थे. मार्टिन राम ने गौर किया तो उस औरत को पहचान गए. वह नोखे कबाड़ी की विधवा थी.

किसी जमाने में नहर कहे जाने वाले एक बहुत गहरे नाले के किनारे धीरे-धीरे कुछ ऐसे लोग बसते गए थे जिनकी हैसियत शहर में बसने की नहीं थी, लेकिन जिनके बिना शहर का काम नहीं चलता था. खुद उनका काम भी शहर से ही चलता था. इस नाले में शहर के एक बहुत बड़े हिस्से की गंदगी बहती रहती थी. नाले के दोनों किनारे बहुत ढालदार, लगभग चार मंजिल इमारत के बराबर गहराई तक चले गए थे. किनारे अच्छी तरह पत्थर जमाकर बनाए गए थे इसलिए लगभग दो सदियां ऐसे ही झेल गए थे. नहर या नाले के किनारे हाजत रफ़ा करने को बैठ गए बेहद मैले से लोगों की कतार की तरह जो बस्ती बस गई थी उसी में किसी समय कंजड़ों के कुछ परिवार भी आ बसे थे, वे बहुत तरह के छोटे मोटे काम करते थे जैसे भुट्टे भूनकर बेचना, सब्जी या सड़े फलों की टोकरियां लेकर बेचना, शहर में खपने वाले सामान लादकर जाती हुई गाड़ियों के पीछे लपककर कुछ माल झटक लेना और आपस में झगड़े करने के लिए कोई भी बहाने खोज लेना. उनके आपसी झगड़े बहुत खौफनाक लगते थे, पर अक्सर उनका अंत बेहद बेमजा होता था. इसी कतार में कुछ धोबी, पत्थर कूटने वाले, कबाड़ी और बहुत से दूसरे छोटे-छोटे धंधे करने वाले रहते थे. उनमें से ज्यादातर लोगों ने इधर उधर से कुछ ईंटें, टूटे फूटे बांस, तख्ते और टाट जैसी चीजें जुटाकर अपनी झोंपड़ियां बना ली थीं. चूंकि वे लोग निरंतर ऐसी चीजें जुटाने के चक्कर में रहते थे इसलिए एक लंबे अरसे में इन झोपड़ियों में से बहुतों की दीवारें पक्की और ऊंची हो गई थीं.

शुरू में हर झोपड़ी में रहने वाला सुबह हाजत के लिए अपने घर के पीछे नाले के किनारे का इस्तेमाल करता था फिर धीरे-धीरे पीछे दो ईंट रखकर टाट का परदा लटकाया जाने लगा था. फिर आट के परदे की जगह पुराने जंगखाए टिन के टुकड़ों ने ले ली. अब नहर के दूसरे किनारे पर बनी ऊंची इमारतों की खिड़कियों से देखने पर लगता था जैसे उस पार की ये झोपड़ियां ही हाजत रफा कर रही हों.

इन सभी लोगों से सबसे अच्छी जान पहचान नोखे कबाड़ी की हुई. वह शहर भर में घूम-घूमकर टूटा-फूटा पुराना सामान खरीदता रहता था. ऐसे बहुत से डिब्बे या बाल्टियां वह ले आता था जिनकी मरम्मत करके उनसे काम लिया जा सकता था. कई लोगों ने उससे टूटी चारपाई तक खरीदी थी. ऐसी चीजें बहुत कम दामों में मिल जाती थीं. उन्हें ठीक करने वाले लोग भी नाले के किनारे कूड़े और मैल की तरह चिपकी उसी बस्ती में मिल जाते थे. शहर में बहुत-से लोग अब प्लास्टिक के थैलों में बंद आटा खरीदने लगे थे इसलिए नोखे को बहुत ही सस्ते में वे खाली थैले मिल जाते थे. इन थैलों की भी इस बस्ती में खासी खपत हो जाती थी.

नोखे का यह रद्दी का उद्योग ऐसा था जिसमें उसकी बीवी भी हिस्सा बंटाती थी और बच्चे भी. बेटा थोड़ा बड़ा था. वह तराजू बाट टोकरी में रखकर रद्दी अखबार खरीदने निकल जाता था. औरतें उसे बहुत गालियां देती थीं, और अपनी आंखों के सामने बड़ी खुशी से दो किलो रद्दी एक किलो तुलवाकर देती थीं.

नोखे की बीवी सुबह एक बड़े पतीले में खाना चढ़ा देती थी. यह पूरा भोजन होता था. पतीले में कुछ देर अरहर की दाल पकने देती थी. अच्छी तरह उबल जाने के बाद गूंधे हुए आटे की बिस्कुट के आकार की टिक्कियां बनाकर उसमें छोड़ देती थी. यह खाना ताजा तो अच्छा लगता ही था, शाम को बासी हो जाने पर और स्वादिष्ट हो जाता था. दाल पूरी तरह जम जाती थी और वे टिक्कियां उसमें से खोद-खोदकर निकाली जाती थीं.

इसके बाद नोखे की बीवी तीन छोटे बच्चों के साथ अपने काम से निकलती थी. उसने बहुत भारी भरकम बोरे प्लास्टिक के थैले सिलकर बना लिए थे. एक नुकीली-सी लोहे की छड़ी की मदद से सड़क पर पड़े रद्दी कागज और प्लास्टिक उठाकर इसी थैले में इकट्ठा किए जाते थे. यह माल उन्हें उस जगह बहुतायत से मिलता था जहां नगर पालिका के मेहतर शहर की गंदगी की गाड़ियां उलट जाते थे. हर नई गाड़ी डाली जाने के बाद आवारा फिरने वाली गाएं, कव्वे

और कुत्ते इकट्ठा हो जाते थे. उनके बीच नोखे के बच्चे कूड़े को बड़ी रुचि से उलटते पराटते थे क्योंकि उनमें अक्सर पुराने खिलौने, टूटी पेंसिलें और अल्मुनियम की चूड़ी जैसी चीजों के साथ सिक्के भी मिल जाया करते थे. इन चीजों को इकट्ठा करते वक्त अक्सर वे इस कल्पना से बहुत खुश हुआ करते थे कि कभी उन्हें कोई सोने या चांदी का ऐसा जेवर भी मिल सकता है जो किसी अमीर औरत की बेशऊरी से गिरकर खो गया हो. इत्र की छोटी शीशी के लिए वे आपस में लड़ भी जाते थे जिनमें इत्र तो बिल्कुल नहीं होता था, पर खुशबू खूब महसूस होती थी.

यह भी अजीब बात है कि पुलिस की नजरों में सबसे ज्यादा चोर उचक्कों की आबादी भी इसी बस्ती में थी. उसे बड़ी आसानी से अपनी रुचि या पसंद के बहुत से लोग इस बस्ती में ही उपलब्ध थे. गयास ताले चाबी वाले को अक्सर पकड़ लिया जाता था क्योंकि पुलिस को विश्वास था, शहर के हर घर का ताला चोरी के लिए वही खोलता था. मंगतराम इमारतों की पुताई का काम करता था, पर पुलिस का ख़याल था कि वह शातिर चोरों के किसी गिरोह से जुड़ा था और पुताई के बहाने घर की संपत्ति और घुसने निकलने के रास्ते का जायजा लेता था.

इन सबकी तुलना में वहां एक बेहतर मकान भी था. उसकी छत सीमेंट और सरियों से बनी थी. छत पर एक और कमरा भी था. इनमें लोहे की ग्रिल वाली खिड़कियां भी थीं. यह मकान लग्गू कंजड़ का था. कभी उसका बाप यहीं एक नन्ही-सी झोपड़ी डालकर रहता था. वह भैंसे द्वारा खींचा जाने वाला एक बड़ा-सा ठेला चलाता था. इस ठेले पर वह अनाज, फल और लोहे की वे मशीनें लादता था जिन्हें रेलवे स्टेशन से शहर के व्यापारियों के यहां पहुंचाना होता था. ठेले की धुरी के पास लोगों की नजरों से छुपा बोरे का एक थैला लटका करता था. शाम को जब वह लौटता था तो उस थैले से बहुत-सी चीजें निकलती थीं जैसे केले, संतरे, अनाज या साबुन की दो चार टिकियां. शहर की सड़कें अच्छी बन जाने के बाद उसको अपना ठेला बंद करना पड़ा था और इसके बाद एक दिन बहुत ज्यादा शराब पीने की वजह से वह मर गया था. उसके बेटे लग्गू कंजड़ ने भैंसा कसाइयों के हाथ बेच दिया.

लग्गू एक धंधा और बहुत छोटी उम्र से करता था. वह कच्ची शराब की अवैध बोतलें पहुंचाता था. बाप जब मरा तब तक ठेकेवाले प्लास्टिक की थैलियों में शराब बेचने लगे थे. इन थैलियों का काम ज्यादा आसान था. इसका एक बड़ा कार्यकुशल तंत्र था. फैक्ट्री की देशी शराब की बहुत-सी थैलियां बिना एक्साइज के निकल आती थीं. ये थैलियां आम थैलियों से दो तिहाई दामों पर बिकती थीं. कुछ दिनों से लग्गू ने अपने मकान के दरवाजे से सटाकर लकड़ी का एक खोखा लगा लिया था. इसमें सस्ती टाफियां, बिस्कुट और बच्चों की पसंद की कई चीजों के अलावा सिगरेट, बीड़ी, माचिस, नमक की थैलियां, सस्ते साबुन और पान मसाले के नन्हें पैकेट रखता था. रात के वक्त जब आवारा कुत्तों के अलावा ज्यादातर लोग सो जाते थे, लग्गू का असली काम शुरू होता था. लग्गू बीच-बीच में कभी पूरी तरह गायब हो जाया करता था. उस बीच उसकी वह छोटी-सी दुकान बंद रहती थी और उसकी बीवी या बच्चों को देखकर कोई यह अनुमान नहीं लगा सकता था कि लग्गू क्यों गायब है. और एक सुबह वह गालियां देता हुआ प्रकट हो जाता था. और किसी को तो नहीं, पर जब पादरी मार्टिन राम उसे ऐसे मौके पर दिख जाते थे, वह ऊंची आवाज में बोलने लग जाता था—देखिए. देख लीजिए साहब. ये हरामी पुलिस वाले हर महीने मुझसे पैसा ले जाते हैं. फिर भी देख लीजिए उन्होंने किस बुरी तरह मारा है.

आसपास के लोग चुपचाप अपना काम करते रहते थे और लग्गू सरेआम अपने नंगे बदन पर झूलता पटरीदार जांघिया उतार देता था. घूम-घूमकर अपने चूतड़ और जांघों पर बने पिटाई के निशान दिखाता था.

इस बस्ती के ठीक सामने से गुजरने वाली सड़क की दूसरी तरफ कुलीन लोगों के ऊंचे-ऊंचे मकान थे. इन मकानों में रहने वालों का ख़याल था कि नाले से सटी बस्ती चोरों, उचक्कों और बदमाशों की बस्ती है. यह बात वे जोर से कभी नहीं कहते थे. छोटे मोटे त्योहारों या घरेलू उत्सवों में मिलने पर वे इस बस्ती को लेकर बहुत चिंता जाहिर करते थे. वे बड़ी बुद्धिमानी से कहते थे—संस्कारों का सवाल है. संस्कार हैं नहीं. इनके बच्चों को देखो. पढ़ना न लिखना. चोरी उठाईगीरी नहीं करेंगे तो क्या करेंगे?

इसी के चलते कबाड़ी नोखे की मृत्यु हुई थी. नोखे को एक गली में एक नई, लेकिन टूटी फटी फाइबर ग्लास की खाली अटैची लावारिस पड़ी हुई मिली थी. उसने उसे गौर से देखा. अटैची उम्दा थी, मगर वह काम लायक नहीं थी. लगता था जैसे उसे किसी ने नारियल की तरह फोड़ दिया हो. उसने अटैची उठाई और अपनी टोकरी में रख ली. वह अटैची दरअसल पास के रेलवे स्टेशन पर चोरी हुई थी और एक बहुत बड़े अफसर की थी. चुराने वाले ने खोलने में वक्त बरबाद करने के बजाय उसे तोड़ दिया था.

इसी टूटी अटैची के साथ नोखे पुलिस थाने लाया गया था. नोखे की बीवी के आग्रह पर मार्टिन राम रात को थाने गए थे. थाने से पता लगा उन्होंने उसे कबका छोड़ दिया था. बाद में नोखे की लाश अगली सुबह उसी नहर या नाले नाम की चीज़ में मिली थी जिसके किनारे उसकी झोपड़ी थी.

सड़क के उस पार कुलीन लोगों ने अपने मकानों की चहारदीवारी या खिड़कियों से नाले के किनारे इकट्ठा हुई भीड़ देखी और जल्दी ही उसका कारण भी समझ गए और उन्हें खासा ही संतोष हुआ आखिर विधाता न्याय करता है. जो जैसा करेगा वैसा ही भरेगा भी तो. ईश्वर सब देखता है.

यह विचित्र बात थी कि इन कुलीन घरों में रहने वालों का नाले के किनारे के गंदे घरों में रहने वालों ने कभी कुछ नहीं बिगाड़ा था फिर भी उनके बारे में सड़क के उस पार के उस विष्णुनगर के लोग उन्हें इस तरह देखते थे जैसे वे कोई संक्रामक रोग हों. नाले के घरों में रहने वाली औरतें अक्सर विष्णुनगर की महिलाओं की मदद भी करती थीं. पर इसका कोई असर उनकी नफरत पर नहीं पड़ता था.

जहां विष्णुनगर खत्म होता था वहां ऐशबाग शुरू हो जाता था. यहीं एक छोटा सा स्कूल था सेंट जान स्कूल. यह दूसरे

कान्वेंट स्कूलों जैसा नहीं था. नहर के किनारे बसी इस बेहद मैली बस्ती से मिलती जुलती वहां और बस्तियां भी थीं. इन्हीं बस्तियों के बच्चे पादरी मार्टिन राम के इस स्कूल में पढ़ते थे. सारे बच्चे नहीं, बहुत थोड़े से मुश्किल से पचीस. इसी स्कूल के एक छोटे से हिस्से में मार्टिन राम का एक कामचलाऊ चर्च भी था.

मार्टिन राम ने गाड़ी रोककर पलट कर देखा. वह नोखे की बीवी ही थी. लगता था जैसे वह लगातार कराह रही हो. मार्टिन राम ने गाड़ी थोड़ा आगे बढ़ा कर सड़क के किनारे खड़ी की और उतर पड़े.

नोखे की बीवी को पर्याप्त दूरी तक धकेल लाने के बाद वे युवक रुक गए. उसे घुड़क कर बोलेः अब उधर आई तो अच्छा नहीं होगा.

वे वापस हुए तो नोखे की बीवी फिर पलट पड़ी. युवकों ने मुड़कर देखा और चीखेः बात समझ में नहीं आई. लगाऊं—

औरत कुछ क्षण खड़ी रही फिर धीरे धीरे सीने पर हथेलियां मारकर रोने लगी.

मार्टिन राम असमंजस में खड़े देखते रहे. इस बीच मंदिर से ऊंची आवाज़ में मंत्र पाठ शुरू हो गया था—ओम् अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूव...

बालकनी में बैठे संस्कृताचार्य ने कथाकार विचारक और वयोवृद्ध आलोचक ऋग्वेदाध्यायी से कहाः यह मंत्र आपने सुना? वैदिक ऋषि कहते हैं नेत्र आदि इंद्रियों के एक समान होने से ही सभी मनुष्य समान नहीं होते. बुद्धि और मन के कारण वे असमान होते हैं.

कथाकार विचारक ज्यादा विभोर थे. पतली आवाज में सधे शब्दों में बोलेः पंडित जी आप जिसे ऋत कहते रहे हैं वह मैं ज्यादा तो नहीं जानता, पर शायद यहां लगता है हम ऋत के निकट हैं. ये हैं हमारी जड़ें. इन जातीय स्मृतियों से साक्षात् एक अद्भुत अनुभव है. आपको याद होगा जय जानकी यात्रा के दस्तावेजों का जिनमें कहीं वात्स्यायन जी ने कहा है एक चिंतक और सांस्कृतिक कर्मी के रूप में जातीय स्मृति के इस पक्ष से उन्हें वैचारिक उत्तेजना मिली थी.

तभी याज्ञिक की आवाज सुनाई दी—प्राश्निक प्रवर पश्चिम की ओर बाहरी दीर्घा में स्थान ग्रहण कर लें.

अब पीछे की ओर से ढोल, झांझ और शंख की ऊंची आवाजें आने लगीं.

लग्गू अपनी नन्हीं-सी दुकान के पीछे ध्यानस्थ मुद्रा में बैठा था. मार्टिन राम उस रोती हुई औरत की तरफ से ध्यान हटाकर

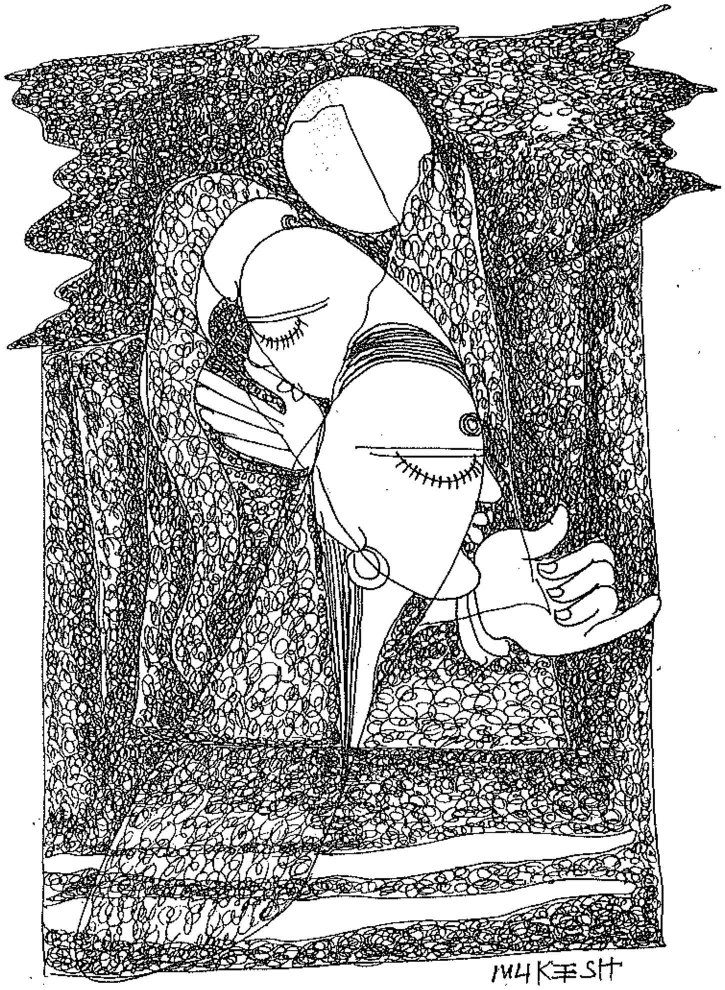

अपनी मोटर में बैठने लगे तो उनकी नजर अनायास लग्गू की तरफ गई. लग्गू ने हमेशा की तरह हाथ जोड़कर उन्हें नमस्कार किया फिर थोड़ी दूर पर सड़क के उस पार वाले मकानों की पंक्ति के बीच बने मंदिर के बाहर की भीड़ की तरफ देखा.

मार्टिन राम को लगा अब पूछ ही लेना चाहिए कि माजरा क्या है. यह उन्हें जरूर लग रहा था कि वहां कुछ असामान्य था.

गाड़ी के अंदर एक पैर रखे हुए ही उन्होंने लग्गू से पूछाः बात क्या है?

लग्गू उठकर उनके पास आ गयाः कभी अपनी मोटर में बैठाइए पादरी साहब.

बैठाऊंगा, बैठाऊंगा पर ये वहां—

वो भी तो साला मादरचोद है. अब कोई क्या कर सकता है.

बात क्या है? क्या मंदिर में कुछ गड़बड़ी की किसी ने?

अरे उसकी हिम्मत कौन कर सकता है. पर पादरी साहब आपने हमारा काम नहीं कराया. आप चाहेंगे तो दो मिनट में हो जाएगा. वो हरामी हवलदार साला, इस बेटीचोद विजय सिंहवे को दूसरे थाने भिजवा दीजिए—

मार्टिन राम को ऐसी गालियां सुनने का अच्छा अभ्यास हो गया था. नाले से चिपकी इस बस्ती का हर कोई बेहतरीन गालियों का अभ्यासी था. बाप बेटे को मां की गाली देता

था, बेटी मां को इसी तरह की शुद्ध गालियां देती थीं. मार्टिन राम रात आठ से दस बजे तक दो घंटे के लिए इसी बस्ती में रहने वालों को होम्योपैथी की दवाएं देते थे. दवा लेने वाला अपने रोग तक के बारे में इसी तरह बताता था—क्या बताऊं पादरी जी गांड फट जाती है, मगर टट्टी नहीं उतरती मां की लौंड़ी—

मार्टिन राम लग्गू की इस हमेशा जैसी आलंकारिक भाषा पर मुस्कराए और मोटर में अपने बेहद लंबे चौड़े शरीर को समेटकर बैठ गए. छोटे आकार की उस फाक्स वैगन में वे बैठकर ऐसे लगते थे जैसे अटैची में किसी ने भारी भरकम रजाई ठूंस दी हो. उन्हें अपना सिर भी थोड़ा-सा झुकाए रखना पड़ता था.

उनके मोटर में बैठ जाने के बाद लग्गू ने उसका दरवाज़ा पकड़ा और उनकी ओर झुक आया, बोलाः ये टीटू मादरचोद फंसा बुरा. साले का चूतड़ सुलग कर रह जाएगा. वो है न टुंडा कबाबी मादरचोद उसके बजाय चूतड़ के कबाब भुनेंगे.

गाड़ी का इंजन चालू करते-करते मार्टिन राम फिर रुक गए. थोड़ा खीझकर बोलेः बात क्या है साफ-साफ बोलो.

उसकी बीवी पता नहीं कहां से प्रकट हो गई. उसने लग्गू को चार-छह गालियां सुनाई फिर मार्टिन राम से बोलीः ये सब कोठी वाले मां के खसमों की अंधेर है.

हुआ क्या?

लग्गू की बीवी ने बताया कि कोठी वाले नोखे के लौंडे को पकड़ ले गए हैं. मंदिर में. कहते हैं उसने किसी कोठी वाले की बहू का हार चुराया है. हरामजादी ने किसी यार को अपनी चुदाई का मेहनताना दिया होगा और बहाना बना दिया कि इसने चुरा लिया.

इस पर कैसे इल्जाम लग गया?—मार्टिन राम ने पूछा.

अरे ये नोखे का लौंडा हरामजादा रद्दी अखबार लेने जाता है न कोठियों में! बस इसी का नाम लग गया.

इसने चोरी सचमुच नहीं की?

अरे क्या बात करते हैं पादरी साहब, ये हरामी तो सड़क पर गिरी चवन्नी न उठाए.

तो क्या मारा-पीटा है?

मार्टिन राम यह सुनकर दहल गए कि नोखे के लड़के को जुर्म कुबूल कराने के लिए एक धार्मिक आदिम विधि निभाई जा रही है.

मंदिर में जो कुछ हो रहा था उसे मंदिर की ही भाषा में वहां शायद ही कोई समझ पाया हो. उन्हें उस कार्यवाही का नाम भी नहीं मालूम था, पर उन गतिविधियों का सारांश आस पास के सभी लोगों तक पहुंच चुका था.

जो लोग नोखे के लड़के को ले गए थे उन्होंने उसके साथ कोई जोर जबर्दस्ती या मारपीट नहीं की थी. उनकी आवाज में वह सख्ती ज़रूर थी जिसके सामने नोखे की बीवी और उसका बेटा दोनों ही बेबस हो गए थे. उन्होंने बिना आवाज ऊंची किए कहा थाः देखो हम इस मामले में पुलिस को बीच में नहीं लाना चाहते. तुम्हें मालूम है कि किसी ने अपराध किया हो या न किया हो अगर पुलिस वाले इस छोकरे को ले गए तो क्या करेंगे. हम यह नहीं कहते इस लड़के ने हार चुराया है. पर जानकी वल्लभ जी का कहना है कि उनकी बहू का सोने का हार उस समय गायब हुआ जब ये उनके यहां रद्दी अखबार लेने गया था. हम लोग जानकी वल्लभ जी की बात का भी विश्वास नहीं करते. पर इस लड़के को मंदिर चलकर परीक्षा देनी होगी. फैसला हम नहीं धर्म करेगा. क्या धर्म पर विश्वास नहीं है? परीक्षा में ये सच्चा साबित हुआ तो सबके सामने जानकी वल्लभ जी को क्षमा मांगनी पड़ेगी और अगर यह चोर साबित हुआ तो सजा पाएगा.

दूसरा बोलाः और सजा भी हम नहीं धर्म स्वयं देगा. कुसूरवार नहीं है तो इसका कोई बाल बांका नहीं कर पाएगा.

तीसरे ने अचानक सवाल कियाः तूने बहू जी का हार देखा था?

जी देखा था. वो पहने थीं. लड़के ने कहा.

वे युवक चुप होकर एक दूसरे की तरफ देखने लगे. उनकी निगाहों का भाव वह लड़का समझ गया.

तीसरे ने कहाः देखो हार लिया है तो चुपचाप लौटा दो. कोई कुछ नहीं कहेगा.

लड़के को लगा गले का हार देखने की बात कुबूल करके उसने अच्छा नहीं किया. वह हार वहां जानकी वल्लभ की युवा, सजी धजी, गोरी और सुंदर बहू के गले में देखना उसके लिए एक अद्भुत अनुभव था. वह युवती जब अखबारों के बंडल उसके सामने झुककर रखती थी तो उसका वह चमकीला हार उसकी चिकनी गोरी ठोढी छूने लगता था और थोड़े खुले गले वाले नीले रंग के ब्लाउज़ से उसकी बहुत सफेद छातियां बहुत उत्तेजक ढंग से दिखने लगती थीं. उस वक्त वह तराजू में डंडी मारना भी भूल गया था. उसकी निगाह कई बार उन छातियों की तरफ गई. शायद जानकी वल्लभ की बहू ने भी देखा होगा कि उसकी आंखें बार बार कहां टिक रही हैं. नोखे के लड़के की आंखों में वह तस्वीर हार के सवाल पर फिर उभरी और शायद इसीलिए उसने हार देखने की बात कुबूल भी कर ली थी.

जब वह मंदिर लाया गया, तीनों युवक उसे नीचे सीढ़ियों के पास छोड़कर ऊपर आ गए. हरिप्रकाश याज्ञिक मंदिर के दरवाजे पर खड़े थे. युवकों में से एक बोलाः पंडित जी, ये कह रहा है कि इसने गले का हार देखा था, पर इस बात से इंकार कर रहा है कि इसने वह हार चुराया है.

अपने काम से काम रखो. फैसला अब धर्म करेगा. इसे पीछे माली की कोठरी में ले जाओ. इसे नहाने का पानी दिलवा दो. सूर्यास्त से पहले जो खाए खिला दो. इसके बाद परीक्षा तक इसे उपवास करना है. हां नहाने के बाद न यह किसी का स्पर्श करेगा न किसी से बात करेगा.—याज्ञिक ने फैसला दिया और अंदर चले गए.

गर्भगृह के सामने बिछी चटाइयों पर मंदिर के प्रबंधक यज्ञदत्त शर्मा और राष्ट्रीय सांस्कृतिक संगम के चार पांच दूसरे लोग बैठे थे. शर्मा ने पूछाः क्या हुआ? वो आया?

हां आ गया है. स्नान और उपवास के लिए पीछे माली की कोठरी में भिजवा दिया है. याज्ञिक ने बताया.

वे लोग थोड़ा आश्वस्त हुए. शर्मा ने पूछाः दिव्य कौन-सा सोचा है?

राष्ट्रीय सांस्कृतिक संगम का एक व्यक्ति बोलाः घट सर्प दिव्य कैसा रहेगा?

याज्ञिक कुछ नहीं बोले. शर्मा ने ही उत्तर दियाः घट सर्प संदिग्ध है.

वो कैसे?

घट सर्प व्यवहार में स्त्रियों के पतिव्रत की परीक्षा के लिए मान्य दिव्य रहा है. महामंडलेश्वर कीर्तिवीर्य का अभिलेख है—संप्रात्पा घट सर्पजात विजयं लक्ष्मीधर प्रेयसी. लक्ष्मीधर की रानी ने अपने पतिव्रत को सिद्ध करने के लिए उस घड़े में डाली गई अंगूठी निकाल ली जिसमें सांप था. वह पतिव्रता थी. सांप ने नहीं डसा था. शूद्रों के लिए जल विष या अग्नि के दिव्य ठीक होते हैं. क्यों याज्ञिक जी? शर्मा बोले.

याज्ञिक ने कहाः इसमें विवाद कैसा? यह वर्षा ऋतु प्रारंभ हो गई है. नारद स्मृति के अनुसार वर्षाऋतु में अग्नि का दिव्य ही उचित होता है.

तो ठीक है. पर उसका प्रबंध तो करना पड़ेगा?

हां. शर्मा जी किसी से एक बड़ी अंगीठी, मंगाकर पीछे मंदिर के बगीचे में सुबह से ही सुलगवा दीजिएगा. उसके ऊपर गर्म करने के लिए एक बड़ा तवा भी चाहिए. शोध्य को उस पर बीस पल के लिए बैठाया जाएगा. इसके बाद दोनों हथेलियां रखी जाएंगी और तवे पर जिह्वा से पांच बार स्पर्श करना होगा. अगर वह शोध्य जलता नहीं है तो वह पवित्र है, उसने चोरी नहीं की है. याज्ञिक ने कहा.

शर्मा बोलेः प्राश्निक? उस समय धर्मवेत्ता न्यायाधिकरण के अलावा प्राश्निक भी तो होते हैं? हमारे संगम के परिसंवाद में तीन बड़े विद्वान आए हुए हैं. क्या हम उन्हें बुला लें?

बुला लीजिए. याज्ञिक ने कहाः पर उन्हें अलग बैठाने की व्यवस्था करनी होगी क्योंकि दिव्य में या तो न्याय समिति के सदस्य और अध्यक्ष आचार्य बृहस्पति रहेंगे या फिर पांच पवित्र मन के साक्षी.

उन्हें हम ऊपर की दीर्घा में तो बैठा सकते हैं?

कर लीजिएगा.

इस सारे कार्यक्रम की कोई औपचारिक घोषणा नहीं हुई. इसको किसी ने प्रचारित भी नहीं किया, पर अगले दिन तक उस सारे इलाके में यह बात फैल गई कि जानकी वल्लभ की बहू के हार की चोरी का पता लगाने के लिए नोखे के बेटे के साथ क्या किया जाने वाला है. किस तरह उसे जलते तवे पर बैठाया जाएगा. इसकी चर्चा हर कहीं हो रही थी.

मार्टिन राम को सारी स्थिति समझने में थोड़ा वक्त लगा. सहसा उनकी समझ में नहीं आया कि वे क्या करें. उन्होंने इंजन चालू किया और धीमी गति से गाड़ी चलाते हुए आगे बढ़ गए. वे समझ रहे थे कि इसमें हस्तक्षेप इतना आसान नहीं था.

घट सर्प व्यवहार में स्त्रियों के पतिव्रत की परीक्षा के लिए मान्य दिव्य रहा है. महामंडलेश्वर कीर्तिवीर्य का अभिलेख है—संप्रात्पा घट सर्पजात विजयं लक्ष्मीधर प्रेयसी. लक्ष्मीधर की रानी ने अपने पतिव्रत को सिद्ध करने के लिए उस घड़े में डाली गई अंगूठी निकाल ली जिसमें सांप था. वह पतिव्रता थी. सांप ने नहीं डसा था. शूद्रों के लिए जल विष या अग्नि के दिव्य ठीक होते हैं.

उनका चर्च कोई खास चर्च जैसा नहीं था. वह एक छोटा-सा पुराना मकान भर था जिसमें उन्होंने नाले के किनारे चिपक गए घरों के कुछ बच्चों को पढ़ाना शुरू किया था. चूंकि वे रात को लोगों को सस्ती होम्योपैथी की दवाएं भी देते थे इसलिए कुछ लोग अपने बच्चे भेजने लगे थे. वैसे न तो उस बस्ती वालों की पढ़ने में कोई रुचि थी और न बच्चों में कोई खास उत्साह था. वे या तो पतंग उड़ाना, कंचे खेलना और एक दूसरे को गालियां देना पसंद करते थे या कोई छोटा मोटा काम करना. बाद में मार्टिन राम ने स्कूल में बच्चों को बंद मक्खन देना शुरू कर दिया. उनका ख़याल था कि इसके लालच में बच्चे जरूर आएंगे और उनकी तादाद भी बढ़ेगी, पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ. दरअसल इस तरह का लालच इन बच्चों में से बहुत कम को ही प्रभावित करता था ज्यादातर बच्चों ने अपनी पसंद की चीजें खाने के इंतजाम कर रखे थे. अक्सर वे सिगरेट या पान मसाले के पैकेट के लिए भी साधन जुटा ही लेते थे.

स्कूल के प्रति रुचि पैदा करने की उनकी इस कोशिश से एक दिन एक तकलीफदेह स्थिति पैदा हो गई. उस दिन बच्चे पढ़ने आए तो बोलेः फादर जी बाहर किसी ने एक कागज चिपकाया है. उस पर आपका नाम भी लिखा है.

मार्टिन राम समझ नहीं पाए कि चिपकाया गया कागज क्या हो सकता है. बच्चे ज्यादा कुछ तो नहीं समझ पाए थे, पर उन्हें यह जरूर लग गया था कि कागज पर जो लिखा है उसमें कुछ गड़बड़ी है. एक क्षण के लिए उन्हें लगा कि इस कागज की सूचना की उपेक्षा करनी चाहिए, मगर फिर वे उठकर बाहर आ गए. कागज पर लिखी इबारत पढ़कर वे खासे ही खिन्न हो गए. एक बड़े पोस्टर के आकार के पीले कागज पर लिखा गया था—ईसाई कुत्ते मार्टिन राम ईसाइयत का घृणित जाल फैलाकर हिंदू धर्म को चोट पहुंचाना बंद कर. लालच देकर हिंदुओं को ईसाई बनाना हम सहन नहीं करेंगे.

एक क्षण के लिए उनके हाथों में हल्की-सी जुम्बिश हुई. शायद उन्होंने उसे फाड़ना चाहा, पर उसे ज्यों का त्यों छोड़कर वे लौटने लगे. उनके स्कूल के कुछ बच्चे भी उनके साथ बाहर आ गए थे. उनमें से एक बोलाः फादर इसे फाड़ दें?

मार्टिन राम ने कोई जवाब नहीं दिया. बच्चों ने जल्दी ही उस पोस्टर की चिन्दियां कर दी, पर मार्टिन राम को लग रहा था वह पोस्टर वहां दीवार पर नहीं उनकी छाती के भीतर चिपका दिया गया है.

उस दिन उन्होंने बच्चों को पढ़ाया, पर मन नहीं लगा. उन्होंने उन्हें जल्दी ही छोड़ दिया. कुछ देर कमरे में टहलते रहे फिर बैठ गए. मौसम में बेहद उमस थी. निरुद्देश्य ही उन्होंने बाइबल खोल ली—यीशु आत्मा में व्याकुल हो उठे और एक साक्षी दी. मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि तुममें से एक मुझे पकड़वाएगा. शमोन पतरस ने संकेत करके उससे कहा, प्रभु वह कौन है.

वैसे यह पोस्टर बहुत अनपेक्षित भी नहीं था.

मार्टिन राम चर्च में बदल दी गई इस छोटी-सी इमारत में उन दिनों आए थे जब नाले से चिपकी चंद झोपड़ियां ही थीं और इनमें या तो लग्गू के रिश्तेदार अपने ठेलों और भैंसों के साथ रहते थे या कुछ सब्जी वाले. इनके सामने की सड़क बहुत उपेक्षित टूटी-फूटी थी और सड़क की दूसरी तरफ जहां आज खासे सजे धजे मकान हैं, एक बड़ा मैदान-सा था. इस मैदान में कभी मवेशियों का बाजार लगता था. इसी बाजार के कारकुनों के दो चार मकान, काफी खस्ताहाल से और थे. जिसमें आज चर्च है, वह अपेक्षाकृत ज्यादा बड़ा था. यहां चर्च हो जाने से आस पास के उन थोड़े से ईसाइयों को आसानी हो गई थी जिन्हें इतवार को काफी दूर जाना पड़ता था.

इसके बाद जाने कब और कैसे उस खाली मैदान में बड़े नियोजित ढंग से मकान बनने लगे, लगभग एक ही आकार की जमीनों पर सामने छोटे बगीचे और उसके बाद बरामदे कमरे. लगभग हर एक मकान में पोर्टिको और गैराज.

इन मकानों के साथ ही नाले से चिपकी बस्ती के छोटे-छोटे घरों की तादाद भी बढ़ गई थी. और तब एक दिन मार्टिन राम के मित्रों ने यह सुझाव दिया कि वे नाले के किनारे की बस्ती के गरीब बच्चों के लिए एक स्कूल खोल दें.

इन्हीं दिनों वहां मंदिर बना था. इसके बनते वक्त शायद किसी चर्च से तुलना का ख़याल किसी को न आया हो, पर इस पूरे शहर में यह एक अकेला मंदिर तैयार हुआ था जिसमें ऊंची छटा वाला एक सभागार भी था जिसमें तीन तरफ दीर्घाएं थीं. मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा का बहुत बड़ा उत्सव मनाया गया था.

इस उत्सव के मौके पर मार्टिन राम खुद वहां आए थे. बातचीत के बीच लोग हैरान रह गए थे जब मार्टिन राम ने खासे अच्छे उच्चारण में संस्कृत के कुछ श्लोक सुनाए थे. उन्होंने एकं सद्विप्रा बहुधा वदंति की बड़ी खूबसूरत व्याख्या भी की थी. वे काफी उत्साह में दिख रहे थे, पर उनहोंने ध्यान नहीं दिया था कि उनसे थोड़ी दूर बैठे कुछ लोग उन्हें गहरे संदेह से देख रहे थे.

मार्टिन राम के जाने के बाद वहां बैठे लोगों को सहसा लगा जैसे संस्कृत के श्लोक सुनाकर वे वहां अपनी धाक जमाने के चक्कर में रहे हों.

पंडित चंद्र दत्त वेदतीर्थ आसपास बैठे युवाओं के चेहरे ठीक-ठीक पढ़ रहे थे. धीरे से बोले: अब ईसाई और पारसी हमें संस्कृत सिखाएंगे.

संस्कृत सिखाएं या फारसी, सवाल ये है कि इनकी करतूतों पर कभी ध्यान दिया है आपने? एक युवक बोला.

क्या मतलब?

वेदतीर्थ जी आप वेद का तीर्थाटन करते रहिए. इस पर भी ध्यान दिया है कि जितनी तेज़ी से ईसाई धर्मांतरण कर रहे है न बचेंगे वेद न बचेंगे तीर्थ!

इस तल्ख संवाद की अगली शाम एक जुलूस निकला. एक बहुत सजीधजी गाड़ी पर फूलमालाओं से लदा एक चांदी का छत्र था जो आसपास के लड़कों ने कुलीन माने जाने वाले घरों से चंदा इकट्ठा करके खरीदा था. इस गाड़ी के पीछे ढोल-ताशे और झांझ मंजीरे वालों के साथ कीर्तन करते और अबीर गुलाल उड़ाते लोगों की भीड़ थी.

जुलूस चर्च के सामने पहुंचा तो उसमें शामिल युवकों ने पटाखे छोड़ना शुरू कर दिया. यह अनायास नहीं था कि उन्होंने जो हवाइयां छोड़ी वे ज्यादातर मार्टिन राम की खुली खिड़कियों के अंदर गईं. जब ऐसी कई हवाइयां अंदर ही गईं तो चेहरे के हल्के तनाव के बावजूद मुस्कराते हुए मार्टिन राम बाहर आए.

शरीर से वे बहुत ज्यादा ही लंबे चौड़े थे. खुद अपने दरवाजे में भी उन्हें हल्का-सा झुकना पड़ता था. एक क्षण के लिए आतिशबाजी वाले लड़कों के हाथ रुक गए फिर उन्होंने हवाइयां खिड़कियों के बजाय आसमान की ओर छोड़ना शुरू कर दिया और आगे बढ़ गए थे.

इसके बाद उस चर्च के ऊपर लगे छोटे से क्रास को किसी ने तोड़ दिया. वह तोड़ना आसान काम नहीं था. ज़रूर उसके लिए या तो लंबे बांस का प्रयोग किया गया होगा या फिर रस्सी इस्तेमाल की गई होगी. आम तौर पर वे रात यहीं बिताते थे, पर कभी-कभी मरीजों को दवा देने के बाद वे सप्ताहांत गोमती पार की एक पुरानी बस्ती चांदगंज चले जाते थे. वहां से लौटते देर हो जाती थी. उस दिन भी यही हुआ था. देर रात उन्होंने गाड़ी खड़ी की और ताला खोलने जा ही रहे थे कि वह गिरा हुआ सीमेंट का क्रास उन्हें दिखाई दिया.

यहां वे काफी दिन से थे और नाले के किनारे बसे लोगों के हमदर्द हो गए थे ऐसा उन्हें लगता था. पर अब वे समझ नहीं पा रहे थे कि ऐसा क्या था जो इसके बावजूद उन्हें उन सबसे अकेला किए हुए था. उस रात वे लेटे तो नींद नहीं आई. उनकी इच्छा हुई कि वे अपने मित्रों में से किसी को फोन करें और यह घटना बताएं, पर उन्होंने कुछ नहीं किया. अपने अकेलेपन को वे और अधिक गहराता महसूस करते रहे थे.

मार्टिन राम गाड़ी बहुत धीरे चलाते थे, भले ही सड़क कितनी ही खाली क्यों न हो. अजनबी जगह दूसरी गाड़ियों वाले उन्हें कोई नौ सिखुआ मानकर घूरते हुए आगे निकलते थे. आज मंदिर में हो रही घटना सुनकर उनकी गाड़ी की रफ्तार और धीमी हो गयी थी. वे सोचने लगे—कैसे है यह नाले से चिपकी बस्ती? मंदिर में बहुत जोर-जोर से ढोल बजे जा रहे थे और उनकी आवाज़ उन्हें अब भी सुनाई दे रही थी. निश्चय ही ढोल बजाने वाले प्रेम और भुल्लू ही होंगे. उनका घर भी इसी नाले से चिपका हुआ था. दुर्गा पूजा जैसे मौकों पर या घरों के छोटे-मोटे उत्सवों में वे ढोल बाजाते थे और बाकी दिनों में गलियों में घूमकर औरतों की फटी हुई ढोलकें झिल्ली वाले चमड़े से मढ़ने का काम करते थे. औरतों को प्रभावित करने के लिए वे बहुत उम्दा गाते बजाते रहते थे.

नोखे रद्दी वाले का परिवार प्रेम और भूल्लू के पास ही था और कभी शाम को वे भी दाल में पकी आटे की टिकियां खाते थे या प्लास्टिक की थैली वाली शराब में हिस्सा बंटाते थे.

आज नोखे के लड़के का लगभग जीवित दाह हो रहा था और उसके आस पास नाच कर वही ढोल बजा रहे थे.

ढोल बजाना प्रेम और भुल्लू के लिए

एक यांत्रिक काम था. अक्सर जब वे बारातों में बजाते थे उस वक्त नशे में नाचते हुए बारातियों के साथ वे खुद भी नाचते थे.

मंदिर के पिछले आंगन में हालांकि इस अनुष्ठान के दौरान सबका आना वर्जित था, लेकिन फिर भी काफी लोग चहारदीवारी से सटकर आ खड़े हुए थे.

न्यायाधिकरण के आचार्य बृहस्पति नोखे के लड़के से काफी दूर डाली गई एक चौकी पर बैठे थे. उन्होंने बिना किसी ओर देखे कहाः शोध्य के वस्त्र सूखने न पाएं.

नोखे के लड़के के कमर में लपेटा काला कपड़ा सूखा नहीं था फिर भी माली ने कमर से एक बार फिर थोड़ा पानी डाल दिया.

बृहस्पति मंत्रपाठ करने लगेः ओम् त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधाभिर्ये अधि शुप्तावजुह्वत...

पिछले छज्जे पर बैठे प्राश्निक चुपचाप देख रहे थे. मंत्रपाठ के बाद आचार्य बृहस्पति याज्ञिक को संस्कृत में आदेश देने लगेः आठों दिशाओं में आठ देवों पर ध्यान केंद्रित करें और देवों से स्थान ग्रहण करने की प्रार्थना करें. आठ वसुओं को इंद्र के दक्षिण में स्थान दें, बारह आदित्यों को इंद्र एवं ईशान के बीच, ग्यारह रुद्रों को अग्नि के पूर्व—

रात उतरने लगी थी और उस आंगन में बिजली की रोशनी बहुत तेज नहीं थी. बहुत बड़े आकार की अंगीठीनुमा भट्ठी से अब डरावनी लपटें उठने लगी थीं. आस पास बहुत जबरदस्त सन्नाटा था.

बाहर नोखे की बीवी शायद फिर आ गई थी क्योंकि उसकी आवाज़ अंदर तक पहुंच रही थी. बाहर ही किसी ने उसे डांटा—अरे भागती है यहां से या लगाए जाएं डंडे!

उसकी आवाज बंद नहीं हुई. मार्टिन राम अपने असमंजस में घिरे थोड़ी देर कमरे में टहलते रहे फिर उन्होंने दीवार में जड़ी ईसा की मूर्ति की तरफ देखा—हे येरूशेलम की पुत्रियो अपने और अपने बालकों के लिए रो क्योंकि देखो वे दिन आते हैं जिनमें कहेंगे धन्य हैं वे जो बांझ हैं और वे गर्भ जो न जने गए और वे स्तन जिन्होंने दूध न पिलाया. उस समय वे पहाड़ों से कहने लगेंगे हम पर गिरो और टीलों से कि हमें ढांप लो.

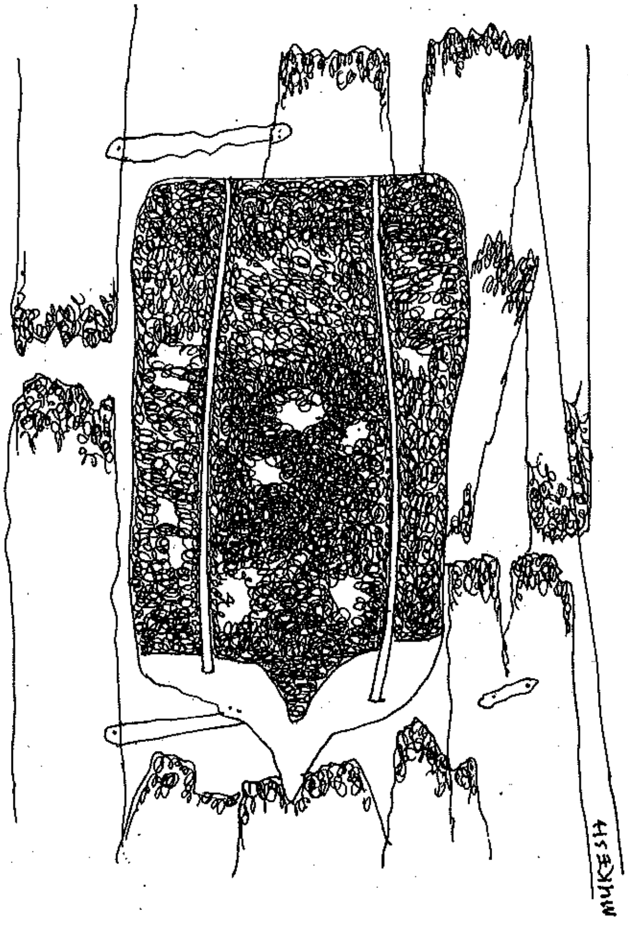

वे बाइबिल का कुछ भी पढ़ें या याद करें, भावुक हो जाते थे. उनका गला भर आता था और आंखें डबडबा आती थीं.

उसी हालत में वे पुलिस थाने आए. थाना ज्यादा दूर नहीं था. नाले से चिपकी बस्ती को काटता हुआ जो पुराना पुल था उसे पार करने के बाद ट्रकों पर सामान ढोने वाले लोगों का एक इलाका था, और उसके छोर पर जहां बहुत-सी गाड़ियां लाश के वास्ते की तख्तियां लगाए खड़ी होती थीं वहीं पुलिस थाना था. थाने में घुसते ही बाईं ओर एक मंदिर था जिसके चबूतरे पर बैठे तीन चार सिपाही पुजारी का राम चरित मानस पाठ सुन रहे थे. उन्होंने वह देखा. इसमें संदेह नहीं कि उस दृश्य ने उनकी निराशा थोड़ी-सी बढ़ा दी.

वे दाहिनी ओर बरामदे में खड़े एक सिपाही से मुखातिब हुएः सुनिए साहब हैं क्या?

उन्होंने अपना परिचय भी तत्काल दिया. सिपाही ने उन्हें बता दिया. अंदर मेज पर बैठा पुलिस अफसर खीझी हुई आवाज में पास खड़े छोटे अधिकारी को कुछ समझा रहा था. उसने मार्टिन राम को देखा, लेकिन ध्यान नहीं दिया. कुछ देर इंतजार करके मार्टिन राम ने अपना परिचय दिया.

हूं. ओह. तो आप हैं मार्टिन राम. बैठिए.

मार्टिन राम बैठ गए. वह अधिकारी इस बार किसी को फोन करने लगा. मार्टिन राम बेचैन होने लगे. पर उपाय कोई नहीं था. थोड़ी देर बाद उसने फिर कहाः जी तो आप ही मार्टिन राम हैं. चर्च है न आपका?

मार्टिन राम ने कहाः सर एक बच्चे की जान खतरे में है और आप ही उसे बचा सकते हैं.

इसके बाद जितनी तेज़ी से संभव हो सकता था उन्होंने सारी बात उस अफसर को बता दी. अफसर सचमुच गंभीर हो गया. कुर्सी की पुश्त से पीठ टिकाकर बोलाः आप जानते हैं यह मामला कितना संवेदनशील है? आखिर यह धर्म का मामला है. किसी दूसरे

धर्म में आप दखलंदाजी क्यों करना चाहते हैं?

मार्टिन राम आहत हुए फिर भी उन्होंने तर्क करने की कोशिश की: सवाल एक मनुष्य की जिंदगी का है—

वह अधिकारी मेज पर झुका और सीधे उन्हें घूरता हुआ बोला: देखिए मैं तो नहीं चाहता था, पर अब बता ही दूं. हमारे पास कई लोगों ने रिपोर्ट की है कि आप आसपास के गरीब लोगों को जोर जबरदस्ती से ईसाई बनाते हैं. ईसाई बनने के लिए उन्हें लालच भी देते हैं—

जोर जबरदस्ती से मैं ईसाई बनाता हूं?—मार्टिन राम ने प्रतिवाद किया: आस-पास के कहीं किसी एक व्यक्ति को भी—

अफसर ने टोका: बात सुन लीजिए पहले. लोगों ने यह भी रिपोर्ट की है कि आपका चर्च राष्ट्रविरोधी गतिविधियों का अड्डा है.

मगर ये रिपोर्ट—

ये रिपोर्ट लगातार आ रही है. मैंने इन पर कोई कार्यवाही तो नहीं की? आपसे कभी कोई पूछताछ भी नहीं की. खैर अब आप वो सब छोड़िए. मैं देखता हूं उस लड़के के बारे में क्या कर सकता हूं.

पुलिस थाने में मिली सूचना से उन्हें ज्यादा उलझन हुई. इतने समय से उनके विरुद्ध यह सब हो रहा है, वे गाड़ी पर बैठे और वापस लौट पड़े. वे यह भी समझ गए थे कि उस लड़के के साथ मंदिर में जो कुछ हो रहा था उसे लेकर पुलिस कुछ नहीं करेगी. थाने से लौटकर वे चर्च नहीं आए. शायद मंदिर की घटना से कतरा जाना चाह रहे हों. वे चांद गंज के अपने मित्र पी.के. दास के यहां चले गए. दास के यहां उन्हें खासी देर हो गई. दास की पत्नी ने बहुत अच्छे स्टीक्स तैयार किए थे. मार्टिन राम काफी हद तक अपनी उलझनें भूल भी गए.

वे वापस लौटे तो मंदिर में पूरी तरह सन्नाटा था. शायद सब लोग चले गए थे. उन्हें लगा, शायद अच्छा ही हुआ कि जो कुछ भी घटा उसके वे गवाह नहीं बने. नाले के किनारे की उस मैली बस्ती में भी खासी खामोशी थी. एक जगह कुछ लोगों के खड़े होने की हल्की-सी झलक उन्हें मिली पर अब वे उस तरफ से फिलहाल पूरी तरह असंपृक्त हो जाना चाहते थे.

चर्च के सामने पहुंच कर उन्होंने गाड़ी रोकी और एक क्षण में समझ गए कि वहां क्या हुआ है.

जिस वक्त नोखे के लड़के को भीगे हुए कपड़ों सहित तेज तपते हुए लोहे के तवे पर बैठाया जा रहा था, थाने के दो सिपाही मंदिर आए. मंदिर के बाहर खड़े युवकों में से एक ने पूछा: क्या बात है?

यहां क्या हो रहा है?—एक सिपाही ने पूछा.

यहां क्या हो रहा है मतलब?

थाने में रपट लिखाई गई है कि यहां किसी लड़के की जान को खतरा है. बात क्या है?

युवक चौंक गया, थाने में रिपोर्ट? किसने लिखाई है?

सिपाही ने बता दिया कि रपट पादरी साहब ने लिखाई है. मोटर पर आया था.

हमें तफ्तीश तो करनी ही है. दूसरा सिपाही बोला.

हद हो गई. यहां मंदिर में अनुष्ठान हो रहा है. अब हिंदुओं की ये हालत हो गई कि हम अपने मंदिर में धार्मिक अनुष्ठान भी नहीं कर सकते? और तुम लोग चले आए यहां तफ्तीश करने?

सिपाही चुपचाप वापस लौटने के लिए पहले से ही तैयार होकर आए थे. वे लौटने लगे.

युवक बोला: थोड़ी देर में आना प्रसाद ले जाना.

सिपाहियों के जाते ही उत्तेजित युवकों की एक भीड़ मार्टिन राम के चर्च की तरफ दौड़ पड़ी थी.

मार्टिन राम ने देखा चर्च का दरवाजा शायद कुल्हाड़ी से फाड़ दिया गया था. अंदर की हर चीज़ बुरी तरह तोड़कर नष्ट कर दी गई थी. छत के बल्व, पंखे तक तोड़े गए थे. तभी उन्हें एक उन्माद भरा शोर फिर सुनाई दिया. उन्हें लगा वे चर्च से बाहर आएं पर तभी बाहर उनकी मोटर तोड़ी जाने लगी. टूटी खिड़कियों से उन्होंने देखा, कुछ लोग उछल-उछल कर जलती हुई लुकाठियां हिला रहे थे.

•

अक्तूबर 1999 से पुनर्प्रकाशित

सामाजिक सरोकार और सांस्कृतिक चिंताओं का मासिक पत्र

समयांतर

अक्तूबर और नवंबर के अंकों में प्रकाशित लेखक :

राजेन्द्र यादव, असगर वज़ाहत, आनंद प्रकाश, बटरोही, पंकज सिंह, रवि मोहन बकाया, किरण शाहीन, क्षितिज शर्मा, प्रेमपाल शर्मा, पुण्य प्रसून वाजपेयी, सदानंद मेनन, रामाज्ञा राय 'शशिधर' आदि.

संपादक

पंकज बिष्ट

एक प्रति : **पांच रुपये**

वार्षिक : 60 रुपये, दो वर्ष : 100 रुपये

संपर्क : **व्यवस्थापक समयांतर**

79 ए, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095